बिलट पासवान 'विहंगम'

जन्म : 4 जनवरी 1941 ई० ।

जन्म स्थान : एकहत्था, खुटौना, मधुबनी

कृति : 'भैरवी', एवं 'रणभेरी' (**मैथिली काव्य-संकलन**), 'चयनिका' (**गीत-संग्रह**), 'सलहेस साठिका', 'वृत्त-व्यास' (**हिन्दी काव्य-संग्रह**) 'सलहेसायण' (महाकाव्य)-प्रकाशनाधीन, 'आगि भरल जिनगी' - खण्ड काव्य ।

उपाधि : राष्ट्रपति द्वारा 2005 ई० मे **'पद्मश्री'** उपाधिसँ अलंकृत।

पुरस्कार : राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान, मिथिला विभूति शिखर सम्मान, चेतना समिति, बिहार द्वारा 2003 ई० मे देल गेल।

श्री बिलट पासवान 'विहंगम' मैथिली साहित्यमे गीतकारक रूपमे जानल जाइत छथि। ई छात्रावस्थहिसँ राजनीति आ साहित्यसँ समान रुचि रखैत आयल छथि। बिहारक राजनीतिमे लगभग बीस वर्ष धरि एम.एल.ए. रहलाह। राज्यमंत्री, काबीना मंत्री पदकेँ सुशोभित कयलनि। एतबे नहि पाँच वर्ष धरि बिहार लोक सेवा आयोगक सदस्य, पूर्व अध्यक्ष, बिहार अन्तर विश्वविद्यालय बोर्डक अध्यक्ष आदि पदकेँ सुशोभित कयलनि अछि। विभिन्न पत्र-पत्रिका-- हिन्दुस्तान, आज, आर्यावर्त्त आदिमे लेख छपैत रहलनि अछि।

काव्य-संदर्भ : 'विहंगम' जीक कवितामे गाम-घरक चित्रण एवं दलित-वर्गक वर्णन सर्वत्र भेटैत अछि। प्रस्तुत कवितामे 'भैरवी'सँ लेल गेल अछि जाहिमे मिथिलाक श्रमिक वर्गक अभावग्रस्त दयनीय अवस्थाक अभिव्यंजना भेल अछि ।

आषाढ़ गीत

बदरिया चलाबै अछि बाण !
सब मिलि झट-पट रोपह तूँ धान ।

तीन कट्ठामे छओ जोड़ बीया
छप-छप कदबा-सान,
दुइ जन मिलिकऽ ठुट्ठी रोपऽ
कहि गेल चतुर किसान !

घर मे बुचिया भुखले हेतै,
टप-टप चुअय मकान;
तीन मासक मुनमा बेटा,
सुतले हेतै मचान !

भूखक लेल सटल पँजरा अछि,
गिरहत केर नहि ध्यान;
दुपहर भऽ गेल, ठीक-ठीक बारह,
भेजलक नहि जलपान !

करिया मेघ बरसि गेल अदरा,
कजरा बहल इसान;
चंचल लहरि चलह हे सजनी
ठिठुरल जाइ अछि प्राण !

●

प्रश्न ओ अभ्यास

1. एहि कविताक नाम **आषाढ़ गीत** किएक देल गेल ?
2. 'ठुट्ठी रोप'सँ कविक की अभिप्राय छनि ?
3. कवि एहिठाम मजदूरक आर्थिक स्थितिक केहन चित्र उपस्थित कयलनि अछि ?
4. 'अदरा' आ 'इसान' की थिक ? एकरामे की सम्बन्ध छैक ?
5. आषाढ़ गीतक सारांश लिखू ।

गतिविधि :

1. 'छओ जोड़ बीया'क की अभिप्राय?
2. डाकक वचनसँ की बुझैत छी ? खेती, बरखा, मेघ, हवा आदिसँ सम्बन्धित डाकक वचनक संग्रह करू आ एकर प्रमाणिकता पर विचार करू।
3. आषाढ़ गीतसँ सम्बन्धित आओर कोनो कविता लिखू।
4. शिक्षकसँ आषाढ़क विशेषताक ज्ञान अर्जित करू।
5. निम्नालेखित पंक्तिक आशय स्पष्ट करैत एहिमे वर्णित श्रमिक वर्गक मार्मिक दशा पर विचार करू :

भूखल लेल सटल पँजरा अछि,
गिरहत केर नहि ध्यान;
दुपहर भऽ गेल, ठीक-ठीक बारह,
भेजलक नहि जलपान !

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइछ जे डाक ओ घाघक वचन-संग्रह करबामे छात्रक सहयोग करथि।

(ख) शिक्षक वर्षा ऋतुक विशेषतासँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।

(ग) मिथिलाक भौगोलिक पर्यावरणक परिप्रेक्ष्यमे मजदूर वा श्रमिक लोकनिक दयनीय अथवा उपेक्षित दशासँ छात्रकेँ परिचित करयबाक प्रयोजन अछि।

□